ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

उज्जयिनी की तांम्रपाषाणिक सांस्कृतिक वैभव

महेश चन्द्र मालवीय[1], डॉ. बलराम बघेल[2]

शोधार्थी[1], शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, इतिहास[2]

शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी

सार: उज्जैन के ताम्राश्म संस्कृति केन्द्रों में कायथा ,नागदा , रूनिजा, महिदपुर एवं दंगवाड़ा प्रमुख हैं। इसके अजिरिक्त भी कई ऐसे स्थल हैं जहॉ सर्वेक्षण के दोरान ताम्राश्म अवशेष प्राप्त हुये हैं । इन सभी स्थलों के सांस्कृतिक चिन्हों का यदि तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाये तो कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए है। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ताम्रपाषाण संस्कृति एक विशिष्ट ग्राम्य संस्कृति थी जिसका विस्तार यूं तो पश्चिमी, दक्षिणी एवं मध्यभारत आदि दिशाओं में था। किन्तु मध्यभारता के पश्चिमी भाग आदि में इस संस्कृति के कई संपन्न केन्द्र थे । इसमें भी उज्जैन एवं उसके आसपास तो यह संस्कृति अत्यंत समुन्नत स्थिति में थी । उज्जैन के केन्द्रों में तो उसकी प्राचीनता विविधता एवं उत्कृष्टता अत्यंत उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार हम देखते है कि उज्जैन ने ऐसे शासन को संबर्धित किया जो उपराज के पद पर रहते हुए धम्माशोक के नाम के इतिहास में अमर हुआ और उज्जैन ही नहीं वरन संपूर्ण भारत वर्ष का विश्व धरोहर के रूप में उसे गौरव दिलाया, जिसे इतिहास कभी विस्मृति नहीं होने देगा।

शब्द कुंजी: तांम्रपाषाणिक, सांस्कृतिक वैभव , मालवा संस्कृति, सांस्कृतिक आयाम , लघुपाषाण उपकरण, उज्जयिनी, सांस्कृतिक वैभव, पुरातात्विक ।

प्रस्तावना

उज्जयिनी का हर स्थान का अपना एक सांस्कृतिक वैभव होता हैं, जिसके आधार पर उसकी पहचान होती हैं । यह सांस्कृतिक पहचान समस –समस पर हुऐ सामाजिक एवं सभ्यतागत परिवर्तनों का परिणाम होती है, जोकि कई वर्षो के उतार–चढाव एवं मूल्यों के आधार पर निर्मित होती है । इसी क्रम में उज्जैन का सांस्कृतिक वैभव भी अभूतपूर्व हैं। उज्जैन मध्यभारत में स्थित एक अति प्रचिन नगर है । ऐसा माना जाता है कि उजजयिनी विष्णु के उन प्राचीन केन्द्रों में आता है जहॉ मानव बस्तियॉ सर्वप्रथम बताई ।[1]

उज्जैन की सर्वाधिक विशिष्ट पुरातात्विक पहचान है । यहॉ कई ताम्राश्मकालीन केन्द्रों का पाया जाना । ताम्राश्मकालीन संस्कृति जिसका लगभग आधी सदी पूर्व भारतीय पुरातत्वविदों को संज्ञान ही न था उसके तीन प्रमुख ताम्राश्म सांस्कृतिक अनुक्रम यहॉ पाये गये और यह क्षैत्र भारत के ताम्राश्म केन्द्रों का प्रमुख स्थान हो गया ।[2]

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि ताम्रपाषाण संस्कृति उस काल से संबंधित है जब मनुष्य प्रथम बार पाषाण एवं अस्थियों के अतिरिक्त उपकरण निर्माण हेतु किसी अन्य माध्यम की ओर आकर्षित हुये । इस माध्यम को पिघलाकर, ठोक–पीट कर मनचाही आकृति में परिवर्तित किया जा सकता था । यह माध्यम ताम्र अथवा ताबां धातु थी । ताम्र के प्रयोग से मनुष्य का उपकरण निर्माण करना आसान हो गया एवं उसकी प्रयोग विधि रूचिकर भी थी, किन्तु फिर भी सदियों से चली आ रही पाषाण से उपकरण निर्माण तकनीकी समाप्त नहीं हुयी एवं दोंनों का प्रयोग कम अधिक साथ–साथ चलता रहा । उस काल को जब दोनों ताम्र एवं पाषाण का साथ में उपयोग हो रहा था। उसे ताम्रपाषाण काल एवं उस संस्कृति को ताम्रपाषाण संस्कृति । भारतीय

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 3, Issue 2, February 2022

पुरातात्विक इतिहास में ताम्रपाषाण काल का विशेष महत्व है। विद्वानों का ऐसा मानना है कि जैसे–जैसे हडप्पा अपने क्षैत्र में समाप्त हो रही थी वैसे – वैसे ताम्रपाषाण संस्कृति का अविर्भाव हो रहा था।[3]

उज्जैन जिले के मुख्य ताम्रपाषाणिक केन्द्रः

उज्जैन का क्षैत्रफल लगभग 6.031 वर्ग किमी है जोकि यहॉ की 6 तहसीलों खाचरोद ,महिदपुर, घटिया, तराना, बड़नगर एवं उज्जैन में विस्तारित है। गेहूँ ,बाजर,चना,ज्वार एवं सोयाबीन यहॉ कि प्रमुख फसलें हैं यहॉ की मुख्य नदी क्षिप्रा है जोकि चम्बल नही की यहायक नदी है । क्षिप्रा उत्तरवाहिनी है एवं इसनें तीन ओर से उज्जायिनी को घेर रखा है । इसी कारण इसका नामकरण भी हुआ है क्योंकि क्षिप्रा का अर्थ ही होता है कटि आभूषण उज्जैन के ताम्रपाषाणिक केन्द्रों की प्राप्ति प्रायः चम्बल अथवा नर्मदा नदियों अथवा उनकी यहायक नदियों के तट पर हुई है । उज्जैन जिले से प्राप्त प्रमुख नागदा, एवं दंगवाड़ा, चम्बल नदी के तट पर कायथा, छोटी कालीसिंध नदी के तट पर एवं महिदपुर क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित हैं।

कायथाः

कायथा अथवा कापित्थक नगरी जोकि वराहमिहिर जी की जन्मस्थली के रूप में भी पहचानी जाती है मालवा के पठार में 22.78 डिग्री उत्तर अक्षांश एवं 78 डिग्री पश्चिमी देशांतर में स्थित है। यह चम्बल नदी की यहायक छोटी कालिसिंध नदी के तट पर स्थित है । उज्जैन–मक्सी मार्ग पर लगभग 25 किलोमीटर पर स्थित है। एक समय पर यहॉ सागौन,पलास आदि के जगल थे। जिसे काटकर ताम्राश्म संस्कृति के लोगों ने अपने रहने योग्य स्थान बनाया है। इन वनों को काट कर कायथा के ताम्राश्म लोगों ने चावल एवं गैहूँ क्रमशः लगभग 1900 ई.पू. एवं 1600 ई.पू. के लगभग उगाए थे ।[4]

तृतीय स्तर मालवा संस्कृति से संबंधित था। इस टीले की तीनों खातों में ताम्राश्म संस्कृति अचानक गायबब होती दिखती है। ताम्राश्म पात्र परंपरा के बाद चित्रित धूसर पात्र पी.जी. डब्यू एवं उसके बाद एन.बी.पी. एवं उसकी सहयोगी पात्र परंपराओं के स्तर मिलने हैं। किन्तु ताम्राश्य पात्र परंपरा एवं पी.जी. उडब्यू. के बीच में 900 वर्षो का अंतर है । पुनः पी.बी.पी. के बाद ऐतिहासिक कालों का संस्कृतिक क्रम भी यहॉ मिलता है।

दूसरा टीला टोडा कहलाता है। यहॉ का उत्खनन बहुत ही महत्वपूर्ण था, क्योंकि यहॉ का पहला स्तर 2100 ई.पू. का कायथा संस्कृति कहलाया । यहॉ से ताम्र की चूडी एवं छड़ मिली और एवं विशिष्ट प्रकार की पात्र परंपरा भी प्राप्त हुई । जिसे कायथा पात्र कहा गया ।[5] यहॉ से प्राप्त दूसरी स्तर भी कायथा संस्कृति से संबंधित है जोकि नये प्रकार के पात्र को अपना रहे थे। ये पात्र चित्रित धब्बेदार काले एवं लाल पात्र, धूसर पात्र एवं अत्याधिक पके हुये उत्कीर्णित लाल पात्र थे । ये काल लगभग 200 वर्ष तक चला । तृतीय स्तर ताम्राश्म मालवा संस्कृति से संबंधित था ।

कायथा से प्राप्त पात्र न केवल अपने विभिन्नता एवं विशिष्टता के लिये जाने जाते हैं अपितु यहॉ से प्राप्त पात्र चित्र पर चित्रित चित्रों से भी कई सूचनाऍ प्राप्त होती हैं। इन पात्रों पर ज्यामितीय चित्रण , प्रकृतिक चित्रण एवं पशु चित्र प्राप्त होते हैं । ज्यामिती चित्रण में पंक्ति,पंक्ति एवं बिन्दु चित्रण ,लहरदार चित्र आदि हैं। पशु –पक्षी में हिरण, सांभर,बैल, कुत्ता, चीता, मोर, बाज, आदि प्रमुख हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कायथा में मालवा की सर्वप्रथम धातु उद्योग स्थापित हुआ था।[6]

नागदा :

नागदा चम्बल तट पर स्थित ताम्रपाषण संस्कृति का एक केन्द्र है। उज्जैन जिले का यह पुरास्थल उज्जैन से 47 कि.मी. दूरी है। बम्बई दिल्ली रेलमार्ग पर यह स्थित है । नागदा रेल्वे स्टेषन से लगभग 1.6 कि.मी. उत्तर–पश्चिम मे उत्खनिज भाग स्थित है। यहॉ पर स्थित टिले की ओर सर्वप्रथम ए.वी. पंड्य ने 1945 में ध्यान आकर्षित कराया । पुने वाकणकर जी के प्रयत्नों के बाद आर्कियोलॉजी सर्वे आफॅ इंडिया के तत्वाधान

ISSN (Online) 2582-9327
IJARSCMT
International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology
Impact Factor: 5.781
Volume 3, Issue 2, February 2022

में एन.आर. बनर्जी के नेतृत्व क्रमशाः1955–56 एवं 1956–57 के दो सत्रों में उत्खनन कार्य पूर्ण हुआ । नागदा के उत्खनन में लगभग 32 फीट का उत्खनन किया गया जिसे जीन विभिनन सांस्कृतिक स्तरों में बांटा गया । काल प्रथम, काल द्वितीय एवं काल तृतीय ।

काल प्रथम काल लगभग 1500ई.पू. से 800 ई.पू. का था । लगभग 50 वर्ष का एक अन्तरल मिलता है । यह लगभग 1 फीट 6 इंच का है। इसके पश्चात पुनः काल द्वितीय का सांस्कृतिक स्तर है, जोकि लगभग 7 फीट 6 इंच का है।। इसका लगभग 750–500 ई.पू. माना गया है। काल तृतीय इसके तुरंत बाद है जोकि लगभग 8 फीट 6 इंच मोटा स्तर है। एक स्तर काल 500 से 200 ई.पू. निर्धारित किया गया है। इसमें से प्रथम काल ही ताम्रपाषण संस्कृति से संबंधित है।

ताम्र अवशेष : ये लोग ताम्र को जानते थे किन्तु कम मात्र में केव 6 छोटे–मोटे पुरावशेष इस उत्खनन से प्राप्त हुये हैं। जिसमें एक चूडी एवं कुछ ताम्र के मुड़ तार थे ।

पाषाण उपकरणः कुछ पाषाण उपकरण जैसे ब्लेड, चाकू, चन्द्रिका आदि पाये गये है। यहॉ पर प्राप्त उपकरण स्थानीय रूप से ही बनाये गये हैं। लगभग यहॉ से 751 पाषाण उपकरण प्राप्त हुये है।

मृदगभाण्डः

इस काल के पात्रों पर काले अथवा बैंगनी रंग से चित्रित होते थे। ये चित्र प्रकृति, ज्यामितीय आकृति, अथवा पशु आदि से होते थे । पात्रों के प्रायः कटोरे, प्लेट,जार ,बेसिन गमला अथवा भण्डारण पात्रों के प्रारूप होते थे । नागदा की ताम्रपाषाणिक सभ्यता उत्तरकलीन है इस संस्कृति का प्रथम काल ही ताम्रपाषाणिक संस्कृति का केन्द्र था । इस संस्कृति का सर्वप्रथम विशेषता यहॉ का विशाल रसोईघर है। इसकी माप 20फीट् 20फीट के अनुसार ऐसा अनुमान है कि ये संयुक्त परिवार में विश्वास रखते थे । इस रसोईघर में चार चुल्हे थे । अनुमान है कि ये पूरे परिवार का खाना एक बनाते थे । एक अन्य विशेषता के रूप में यहॉ मनके कई मनके कई प्रकार के मिलते हैं जिनके अनुमान हैं कि यहॉ पर कोई छोटा – मोटा कारखाना रहा होगा। ताम्र का कम प्रयोग एवं लघुपाषाण उपकरणों की अधिकता यहा स्पष्ट करती है कि इस स्थान की ताम्रपाषाण संस्कृति का यहा केन्द्र कम विकसित एवं दूरस्थ रहा होगा ।

इस स्थल की ताम्रपाषाणिक संस्कृतिः

अहाड़ ताम्राश्म संस्कृति इस काल में पाई गई है। मालवा पात्र के कुछ पात्र जोकि लाल पात्र पर काले रंग से चित्रण कर हुये हैं इस काल में आते हैं । द्वितीय काल में बने घरों में फर्श पर पेबल पत्थर बिछे हैं घर की चारदीवारी कच्ची हैं । कुछ लघुपाषाण उपकरण भी पाये गये हैं ये संख्या में 12 है जिनमें कोर, मूसल एवं एक गेद है। यहॉ पर वृषभ प्राप्त हुये हुये हैं जोकि मिटटी से बना हुआ है।

महिदपुरः

वर्तमान महिदपुर उज्जैन जिले में स्थित है जोकि मालवा के पठार में स्थित है । यहा 23 डिग्री 29′ उत्तर एवं 75 डिग्री 46′ पूर्व में स्थित है । जिस टीले पर ताम्रपाषाण संस्कृति पाई गई है । उसे वहॉ की स्थानीय भाषा में भस्मटेकरी कहते है, जोकि चम्बल नदी की सहायक क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है।
सर्वप्रथम पुरास्थल की ओर वाकणकर जी ध्यान आकर्षित किया था । पुनः श्यामसुन्दर निगम जी ने भी संभावना व्यक्त की । जिसके आधार प्रो. रहमान अली जी ने अपने सहयोगियों के साथ विक्रम वि.वि. उज्जैन के तत्वाधान में यहॉ पर उत्खनन संपन्न किया ।

ISSN (Online) 2582-9327

IJARSCMT

International Journal of Advanced Research in Science, Commerce, Management and Technology

Impact Factor: 5.781

Volume 3, Issue 2, February 2022

महिदपुर में तीन सत्रों में उत्खनन। 1986–87,1989–90 एवं 1998–99 । इस उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषों से यहॉ की ताम्रपाषाण संस्कृति 2000 ई.पू. पायी गई है। कार्बन तिथियों के अनुसार इसे विशिष्ट सांस्कृतिक कालों में बाटा गया है।[8]

इस प्रकार हम महिदपुर से एक ऐसी ताम्रपाषाणिक संस्कृति पाते हैं जोकि प्रायः आहाड़ एवं मालवा संस्कृति से संबंधित है। यहॉ की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशिष्टता भिन्न प्रकृति के वृषभ, दीपकों को बहुतायत प्रयोग एवं अद्भूत स्वर्ण निष्क का मिलना है। इन सभी आधारों पर महिदपुर एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाण सभ्यता का केन्द्र है।

इन आधार पर हम यह कह सकते हैं कि ताम्रपाषाण संस्कृति एक विशिष्ट ग्राम्य संस्कृति थी जिसका विस्तार यूं तो पश्चिमी, दक्षिणी एवं मध्यभारत आदि दिशाओं में था। किन्तु मध्यभारता के पश्चिमी भाग आदि में इस संस्कृति के कई संपन्न केन्द्र थे । इसमें भी उज्जैन एवं उसके आसपास तो यह संस्कृति अत्यंत समुन्नत स्थिति में थी । उज्जैन के केन्द्रों में तो उसकी प्राचीनता विविधता एवं उत्कृष्टता अत्यंत उल्लेखनीय हैं। ये सभी केन्द्र समुन्नत एंव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर ने इस भूमि पर मोटा–मोटा लगभग 2000 ई.पू. से 700 ई. पू. तक अपना अस्तित्व बनाये रखा अर्थात् लगभग 1200–1300 वर्ष तक यह सभ्यता विविध रूपों में अर्थात् कायथा संस्कृति, अहार संस्कृति, मालवा संस्कृति अथवा जोर्वे संस्कृति के रूप में विद्यमान रही और इसी कारण से इनके भौतिक अवशेष अथवा स्थापत्यिक ध्यंसावशेष में हमें इतने विस्तृत रूप में मिले हैं। अपने इस काल विस्तार में उसने कई सांस्कृतिक अवदान दिये । उसके बनाये पात्र आगे आने वाली संस्कृतियों के लिये उदाहरण बने उन्हें उसी अथवा परिवर्तित रूप में आगे के काल में आपनाया गया । यद्यपि आज भी इस संस्कृति की उत्पत्ति एवं विस्थापन मार्ग के विषय में संदेह है किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभी और अधिक उत्खनन, सर्वेक्षण एवं उनके विश्लेषण की अत्यन्त आवश्यकता है। यह एक विस्तृत विषय है जिस पर निरंतर अनुसंधान के द्वारा नित नवीन निष्कर्ष निकालते जा रहे है, कि आगामी कुछ वर्षो में और अधिक परिणाम समाने आयें किन्तु यह एक निश्चित तथ्य है, कि उज्जयिनी के सांस्कृतिक आयाम में यह भी एक पक्ष है, जोकि आज से चार हजार वर्ष पूर्व उज्जयिनी के सांस्कृतिक वैभव की गाथा गा रहा है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

[1]. स्मारिका, विश्ववेदसम्मेलन – लेखक –श्रीनिवास रथ ; पृ.स. –1

[2]. श्यामसुन्दर निगम ; अवन्ती क्षेत्र और सिंहस्थ महापर्व;2004; पृ.स.–15 ; प्रकाशक–क्लैसिक शोध संस्थान,उज्जैन ।

[3]. विक्रम स्मृति ग्रन्थ ; लेख –उज्जैन में उत्खनन; लेखक –गंगाधर मंगेश नाडकर्णी ; पृ.स. 476 ।

[4]. कायथा उत्खनन ; पूर्ववत् पृ.स. –1 ।

[5]. पूर्ववत ; पृ.स. 1 ।

[6]. पूर्ववत् ; पृ.स. 48 ।

[7]. पूर्ववत्–52।

[8]. उज्जैन रीजन ; महिदपुर ; रहमानअली, त्रिवेदी, सोंलकलवी पृ.सं.–112 ।

[9]. वी. एस. वाकणकर; लेख–रूणिजा उत्खनन–1981 ; प्राच्यप्रतिभा जलि बिड्ला इंसिट्टियूट; पृ.स.–29 व्हीलर : अर्ली इण्डिया एण्ड पाकिस्तान ; पृ.स. –125–126 ।